Title: Need to revive the Govenment Projects and Development India Limited at Sindri.

श्रीमती रेनु कुमारी (खगड़िया) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार का ध्यान भारत सरकार के उपक्रम प्रौजेक्ट्स एंड डेवलपमैंट इंड़िया लिमिटेड की दयनीय अवस्था को सुधारने के संबंध में दिलाना चाहता हूं। जैसा कि देश में उर्वरक प्रौद्योगिकी के विकास के महती उद्देश्य को लेकर पी.डी.आई.एल. की स्थापना की गई थी। जिसके तहत प्रौद्योगिकी विकास के साथ-साथ उर्वरक परियोजनाओं की परिकल्पना से लेकर उसके निर्माण एवं उत्पादन प्रारंभ करने तक की क्षमता का विकास संस्थान द्वारा किया जाये। 1978 में तत्कालीन उर्वरक निगम के पांच कम्पनियों में विभाजन के पश्चात् पी.डी.आई.एल. को स्वतंत्र कम्पनी का दर्जा दिया गया किन्तु इसके आय का कोई स्थायी स्त्रोत निर्धारित नहीं किया गया। इस वक्त यह तय किया गया कि बाकी की चार उर्वरक कम्पनियां प्रति टन एक रुपये की दर से पी.डी.आई.एल. को भुगतान करेंगी किन्तु यह व्यवस्था एक वर्ा भी नहीं चली। â€¦(व्यवधान) बिहार के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है इसलिए आप हमें बोलने का समय दीजिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो बिहार जो कि अनाथ है, वह अनाथ ही रह जायेगा। आप हमें दो मिनट बोलने दीजिए।

केन्द्र सरकार की औद्योगिक नीति में परिवर्तन के कारण संस्थान को उर्वरक परियोजनाओं का काम भी मिलना बंद हो गया तथा इटली की स्नेम प्रोग्रेटी एवं डेनमार्क की हाल्डर ताप्शो को मुख्य परामर्शदात्रा संस्थान नियुक्त किया जाने लगा। किन्तु ये बहुराट्रीय कम्पनियां पी.डी.आई.एल. को पेटी पर काम देकर इन परियोजनाओं को निपादन करवाती थी जिसके लिए पी.डी.आई.एल. को बहुत कम भुगतान दिया जाता था और बीच का फायदा बहुराट्रीय कम्पनियां उड़ा ले जाती थीं। धीरे-धीरे बहुराट्रीय कम्पनियों ने नयी परियोजनाओं में आयोजित उत्प्रेरक के इस्तेमाल की शर्त रखनी शुरू कर दी तथा ऊपर से तीन वर्ा के उपयोग हेतु उत्प्रेरकों को भी डम्प करना प्रारंभ कर दिया जिससे पी.डी.आई.एल. को उत्प्रेरक का बाजार मिलना धीरे-धीरे कम होने लगा और वे घाटे में चली गयीं।

दूसरी तरफ इस संस्थान के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक द्वारा जानबूझकर उत्प्रेरकों की ज्यादा कीमत कोट कर रहे हैं।â€¦(व्यवधान) अंतिम मुद्दा जो हम सरकार के सामने रखना चाहते हैं, वे तो हम कर ही नहीं पाई।â€¦(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : शून्यकाल में आपको जो सब्जैक्ट उठाना है, वही उठाइए।

...(व्यवधान)

श्रीमती रेनु कुमारी : संस्थान विरोधी कार्य में लिप्त होने के बावजूद 10 महीने पहले अवकाश ग्रहण करने के बाद भी उन्हें बार-बार सेवा विस्तार दिया जाने लगा और पी.डी.आई.एल. को बंद करने की साजिश रची जा रही है।â€¦(व्यवधान)

मैं आपके माध्यम से राट्रीय महत्व की सिन्दरी स्थित पी.डी.आई.एल. को तथा कारखाने को बचाने की मांग करती हूं। अंत में मैं सरकार से यह भी मांग करती हूं कि वह अविलम्ब कार्रवाई करके मुझे भी बतायें ताकि मैं क्षेत्र में स्थिति का अध्ययन कर सकूं।

उपाध्यक्ष महोदय : शून्य काल में कोई देखकर नहीं पढ़ सकता। अभी तक जो होगा, वह हो गया।

...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : हमारे यहां के रूल्स के मुताबिक शून्य काल में कोई भी पढ़ नहीं सकता।

...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठकर ऐसे नहीं बोल सकतीं। नियम 377 में आप पढ़ सकती हैं।